

દા મ સંપૂર્ણ

આશા સરકારી

1.045

ASHA ARCHIVES

૨૭

ॐ नमः श्री आदेश गुरुजिके नमः ३ ॥ ॐ असंख्य जुगं छति
स जुगं ॥ आदि धर्म के धकारे तथ काले ॥ एक पुरुष उत्पन्न भ
या तव्यन होता ॥ स्वामि सिव संगति तव्यन होता ॥ स्वामि बुद्धान
वीछु जोग मध्ये सकल मृतु जेक उक्त तानाति ॥ एता मध्ये एक
या होता ॥ आपते जवा युथन कया ॥ आकास्य भया प्रकासं ॥ फ
ति अंद भयल नद प्रन्द सकरे भया ॥ एक स्थर वृत्तादि सते

गया ॥ सप्त मेघा ताल मध्ये द्य पादुका द्य पादुका मध्ये उपर
कमल उपलप कूर्म कूर्म उपलप ॥ बाल सुकिना लै कि उपलप
मह मछ उपले के छ के छ ॥ सप्त पार्श्वति सप्त पार्श्वति उपलप
पृथिवि पृथिवि उपले ॥ मय मंदलप मय मन्दलप उपलप वा
युमरा डलप वा युमरा डलप उपलप ॥ तेज मरा डलप तेज मरा डलप
उपलप सूर्य मरा डलप सूर्य मरा डलप उपलप ॥ हेम मरा डलप हेम

मण्डल्यउपल्य॥चन्द्रमण्डलेचंद्रमण्डलेउपल्य॥तारामण्ड
ल्यतारामण्डल्यउपल्य॥दूरमण्डल्यदूरमण्डल्यउपल्य सुगं
धिकामण्डल्य सुगंधिकामण्डल्यउपल्य सुमूलिकामण्डल्य
सुमूलिकामण्डल्यउपल्य॥षुचक्रमण्डल्यषुचक्रमण्डल्यउ
पल्यगगनमण्डल्यगगनमण्डल्यउपल्य गगनआकाशमण्ड
ल्यगगनआकाशमण्डल्यउपल्य॥अभेशर्तअवृत्तधार्तभर्य

आकाशअनिरकोहमेते उपजारासंघनिबुद्धाकिसर्तउधमुष
श्रुतपवनरहेदसमासउतयनभया बुद्धानाल्य सधउतय
नाभया असंघअनिरपाया॥अनाल्यअनादिइश्वरकेदिया
इश्वरमुष्यभयाप्रकासं॥ॐकाल्यबंधुत्रिभुवनलाया॥अनादि
सिद्धकेधर्मकिंवंधुप्रायितपसव्यपाया॥स्वामिवंधुकहोक
हेस्वामिआदिधर्मकेसिद्धि जयनहोताधृतिनआकाश जये

नहोता॥ यवतपानिजव्येनहोतायजानबुतजव्येनहोताचन्द्रन
सूर्य जव्येनहोतादेवानदेहलि॥ जव्यनहोताः दारुनमूलज
व्येनहोताः मायितवावजव्येनहोता॥ गार्जनवासजव्यनहोता
किशनआचारजव्येनहोताव्यदनशास्त्रजव्येनहोता॥ श्रीतिन
संसारसूषमनासंधूरजव्येनहोता॥ रात्रिनंदिनजव्यनहो
ता॥ पापेनपरा॥ जव्यनहोताहिंदूरमूसलमान॥ जव्येनहोता॥

कवनाकिल्यायूरुप्रमद्वेस्वामिरियावास॥ अयेआपसभूमया
प्रकासं॥ ॐ सुनोदेवीपार्वतिजि॥ धर्मसंघप्रधंताइश्वरजो
गिप्रधंतागुनंतासुनंता॥ सामंतामूर्धसुगुतिप्रमारथहोयिहि
याभरियरधर्मनेरआवरणपायगयोदुर॥ ॐ नमोःशिवाय॥
श्रीगुरुगोरखनाथचरनपादुकांनमसुते॥ ॐ वसरासवजेनि
रंजनदेव॥ अनंतसिद्धोमेरियायाभैय॥ अवधनेसुगुतावन

जाय। जोतिमध्यसतुरहेपू सुहिसमाय॥ ॐ सुनो देवी पार्वति॥ ध
र्मसंघपधंता इश्वर। जोगिपधंता गुनंता सुनंता सामंता॥ मोक्ष
मुगुतिपरमारत होयि। पद्मिगुनसंघहिया भलिपूरईमने।
लावयपापगयोदुर॥ ॐ नमः शिवाय २ श्रीगुरुगोरघनाथ
चरणपादुकानमस्तुते॥ ॥ ॐ तिसरा संघजसयवनइश्व
रभयसुभादिस्तिअगवचलजिवत्रहिया। अहो निसिमागप

क्षिमरताजालमलद्वयपानिदेना॥ ॥ ॐ सुनो देवि पार्वति
जि॥ धर्मसंघपधंता इश्वर। जोगिपधंता गुनंता सुनंता सामंता
मुक्षमुगुतिपधमारत होयि पद्मिगुनसंघभरिपूर्वमनेला
वसुपापगयोदुर॥ ॐ नमो शिवाय २ श्रीगुरुगोरघनाथच
रणपादुकानमस्तुते॥ ॥ ॐ चौथा संघजे आकासभनिजे
एषिशवदलेकालेताहा सूर्यसबजे पउजे हेतसराकावरेया

याहोति ब्रह्मज्ञानिजोगेंद्रसिद्धिसंकीर्ति ॥ ॐ सुनो देवि पार्व
तिजि ॥ धर्मसंघपधंता ईश्वरजोगिपधंता गुनंता सुनंता सा
मंता मोक्षमुगुतिपधमारत होयि पधिगुनसंघरहिया भरिपू
र ॥ धर्मनेला वसपापगयो डुर ॥ ॐ नमः शिवाय २ श्रीगुरु
गोरषनाथ चरनपाडुका नमस्तुते ॥ ॐ पंचमासंघजे ध
तिन पंचमात्रि ॥ ध्यान पंचसक्तिभया सत गुरुवचनविरो

कार्योकार्यो विलोविचारे सले ॥ सत्यसत्यपासंजोगेंद्रमोक्षमु
गुतिडुवाल ॥ ॐ सुनो देवि पार्वतिजि ॥ धर्मसंघरपधंता ईश्व
रजोगिपधंता गुनंता सुनंता सामंता मोक्षमुगुतिपरमारत
होयि पधिगुनसंघरहिया भरिपूर धर्मनेला वसपापगयो डुर
॥ ॐ नमः शिवाय २ श्रीगुरुगोरषनाथ चरनपाडुका नमस्तु
ते ॥ ॐ पंचमासंघजे विचाले मोक्षमुगुतिपधमारथ होयि ॥

शुनानिरामपवनकहाआत्मादव॥अपराधरियातिनिभुवन
 भरियसुनातिनिभुवनकरियजना॥पवनपानिभरियरहे
 कृपामद्युतनहरिहरब्रह्मास्वककाजानेचयेचेतनेजोश्रीस
 वेदेनितावारे॥ॐ सुनोदेविपार्वतिजि॥धर्मसंघरपधंताइ
 श्वरजोगियधंतागुनंतासुनंतामोक्षसुगुतियधमारतहो
 यिपधिगुनसंघरहियाभरियरधमनेलावयेपापगयो

उंसातमासंधजेआदिब्रह्माअनिमाया॥सिवशक्तिदेविसंजोगमयाहारखलसप्तहारी॥आदेश
 किमायाजालंकनकूपरगएयसप्तहारीसंघरकथतिगोचलिभतारं इपतमासंखनविचित्रंअ
 लमासंधविहिकारं॥अल्पधुप्यकथिनजायजायआनीडिविष्णुमहादेवशिवसत्रतेनेसक

डर॥ॐ नमःशिवाय२श्रीगुरुगोरषनाथचरनपाडुकांनम
 लुते॥॥इतिधर्मसंघरामसमुपदा॥वक्रताहरंतेपापशु
 ताश्रीक्षअवरते॥संध्याप्रभान्तेउच्चारतिविचारंतिपाये
 नल्पनपुत्रपररेनहरत्यमृत्युलोकेआयाभव्यतः॥॥ॐ
 नमःशिवाय२श्रीगुरुगोरषनाथचरनंपाडुकांनमोलु
 ते॥॥शुभकल्पाराशुभसर्वदाकालेशुभं॥॥ॐ॥

ॐ नमोशिवाय२श्रीगुरुगोरषनाथचरनपाडुकांनमलुते॥ ॥इति

गोसांमनामोक्षरुतिप्रथमनारतहोयिपधिगुनेनप्रहिष्यामात्परधमनेलावयेपापगयो

शुनानिरामपवनकहाआत्मादवअपराधरियातिनिभुवन

ॐ नमः श्री गुरु आज्ञा ॥ वृक्षे जिन फल ते जे पि विहे गाद गधं वना
 तः सगायस्पधिन रत्न स जनि मधुयास्कल संसारे सानिद्र
 व्ययतिनि ॥ प्रायने वसम श्रयन्ता वहवोज स्याति ॥ वनं वने व
 हु ॥ समाप्तम् ॥ शुभम् ॥ १०० ॥

लभा ॥ सहितं ॥ श्री वासुकि नाग भैरव भैरवी भयहर न चरण कमल पादुका नमस्तुते ॥
 ॥ १ ॥ अष्टमे भजेति गोरपनाथ जि भैरव माता पिता हिन्दु के देव मो प्रमान के पिर
 हिन्दु का मीदिना भू अमान के भकाम के मीदिना वैथे द जगायिरे कावयोरा सौ वैथ के तं प्र
 वगायिले ॥ रुकलारव अति हजर यिरादि गैवर मह पद को दाव रगायिले ॥ अर्नत को
 तिसिद्धा उर उसाई के पास ॥ सेवा प्रजा चंदन फूल आति धुप ध्यान जय जय कार
 चार चौरासि जि त्रा जगु को आहार चार ॥ दाना पानि चूगा पुरायिरे जिस्के डार
 द्रुगे विमंगला देवी मन पवन वाहन ॥ अस्तमे स भुजति गुरु गोरपनाथ भैरव
 भैरवी भयहर ॥ दुलतरणै नान्द विदु जोत करार ॥ दुर्द्धर न माने गुपर चंदन फु
 ल मति सहित ॥ ८ ॥ श्री स भुजति गुरु गोरपनाथ जि भैरव भैरवी भयहर
 रण चरण कमल पादुका नमस्तुते ॥ उंकारे ॥ आदिनाथ उदेनाथ पार्वति सतना
 थ व्रलास तो पनाथ विष्णु गज वे गज कण्ठ नाथ ॥ अं चोर चं वेरि नाथ मा
 या रूपि भदिंद्र नाथ चिन्तन सेरु पिज्ञान पास पिर चौर गि नाथ निरध ट मे
 ध ट पिन्द नाथ ॥ स भुजति गुरु गोरपनाथ रता रते अष्ट भैरव न वनाथ ॥ सै पु

आशा संस्कृति

1.045

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ श्रीप्रथमवलि उत्तरदिशा
दिजे. सारीदामोदर. माहमाईकी पूजादिजे ॥ पूजे जोगि. वी
सहजाने फूल. वी. दीसीसम्या पथं दीजे. वलिदिजे ॥ दाता
दान. पतिको उधार. भनिदिजे ॥ जति सतीवाल गोपाल रा
जा प्रजाको वीघ्र मंदीट. उधार भनिदिजे ॥ १ ॥ दुसर वलि
पर्वदीसा दीजे. कामुक्ष्यामालं माया देवी. की पूजादिजे पुजा
हा

जोगिनी सहजाने फूल री. दीसीसम्या. मध्ये जोग्यंतीतीत्ये
वलिदिजे ॥ दाता दान पतिको उधार भनिदीजे. जति सति
वाल गोपाल राजा प्रजाको वीघ्र मंदीट उधार भनि पूजा दी
जे ॥ २ ॥ तीसरा वलि दक्षीणा दीसा दीजे. मंगला देवी माहा
माया देवीको पूजा दीजे ॥ पुजा जोगिनि सहजाने. फूल री
दीसीसम्या मध्ये. जे पथंतीतीत्ये वलि. दिजे ॥ दाता दा

नयतिकोउधारःभनीपूजादीज्ये॥ जतीसतीवासगोपालरा
जाप्रजाकोवीष्टुप्रंदीतभानिपूजादीज्ये॥ ३॥ चौधबलिप
छिमदीसादीजेहेगुराजमाहमायाकोपूजादीज्ये॥ पूज्ये
जोगिनिसहजाने॥ ~~सुभम्~~ ~~समाप्तम्~~ ~~सुभम्~~ ॥

श्रीकल्पार्णमुच्यतेमनामिसिद्धानसिवपुरिभते ॥ ६ ॥ ॐ नमः शिवाय शि
वाय अष्टभैरवक्षत्रपालाय नमः ॥ संध्याप्रभाते उरतिविचारं निपापेन
रेन पुत्रपुण्यानहरति ॥ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ श्रीअष्टभैरवक्षत्रपा
लाय नमः ॥ इतिक्षत्रपालः शुभम् ॥ ० ॥

स्य वैर ॥ ॥
ॐ नमो आदेशगुरुजीको नमः ॥ ॐ नमो आदेशगुरुजीको कं
थेयै नमः सरस्वति ही दयेय्यमहेश्वर भोला आछ सप्रका
संकरो नमो शिष्टुत्रंगारोसं ॥ पथमं श्रीअनीलनाथसीध्द
इष्टातीभैरवस्वामिस्वरगमध्वपातालतीनीरखंदथापी
लपवस्वामीस्वामिहेश्वरपीताके पासस्य ब्राह्मणपूजाचन्द्रनफ
लं आरतीधूपध्यानं जयजयकालचालंचपुरासीजीवा

जंतुको आहार चालं दाना पानी चुगा पुरा इत्ये जीसके अरधं
 गेमन सा देवी मन प्रसेवा हनं ॥ प्रथम श्री अमिता नाथ सीधे तु
 जि ध्य पुन्य भैरवं भैरवी भैरव नंद सुत तरन नंदवीं दुजातक
 लालं ॥ उक्तं मानं तु ध्य फल मती सहति ॥ श्री आनन्द भैर
 वं छेत्र पाला येत मो नमो ॥ १ ॥ इति यं श्री मोहा देव भैरवं स्वा
 मि मान सरोवर वैष्णवे ॥ राजा पातौ क माला ध्यते किरं
 ॥ धुति ॥

जि
 दैरवि
 देवं

गथा पना धायिले ॥ भगलींग की पुजा चले तेती सकोती देवीता
 की गुरु गो साही वोला इत्ये तेती स कोती देवता की गुरु गो
 साही सुसान पासके पास स्यवा पुजा चंदन फूल आरती धु
 प्रथानं जय जय काल चालं च पुरा सी जी वा जंतुको आहा
 र दाना पानी चुगा पुरा इत्ये ॥ जीसके अरधं गे गंगा गो
 रि पारवती देवी जो गुरु व डेवा वा हनं ॥ इति ये श्री
 ॥ धुति ॥

चारं

माहादेवजीभैरवंभैरवीभैरवीहरनहुसुततरननांद
 वींडुजोतकलालंघुश्रीमाहादेवजीभैरवंभैरवीभैरवीहर
 नचैस्वयाडुकानमस्तुते॥ तृतीयसीधमहोदनाथ
 जीभैरवं॥ राधोमक्षकेगरभअवतारलीया॥ जानजो
 तीप्रकासकरोसंभुयतीगुरुगोरषनाथजीईछाग

रुखोलाईते॥ क्षीरसमुद्रअवतारलीयेकजरेक्षत्रवै
 थकेराजापातकमालेनौराषदपकजरायिले॥
 अर्थराषभुतावरलीकिराजाबोलाईले॥ अथराष
 भुताचरीराकेपास॥ सेवापूजाचन्दनफलआर
 तीधुपध्यान॥ जयजयकालचालंचौरासीजीवा

जगुको॥ आहार चाल दाना पानी चुगा पुराई लपजी
सके अरधं गमंगला देवीं मंगल मछुवाहन॥ स॥

मो प्रा शुभम् ॥ १०१ ॥ तृतीय सिद्धि मन्त्रिद्विनाथ जिभैरवै

भैरवी भयहरणी दुस्तरणी नान्दविन्दु जोत करारुर्द्धरमान गुपरचन्दन फूल मति सहि
त श्री सिद्धि मन्त्रिद्विनाथ जिभैरव भैरवी भयहरणी चन्दन के मल पादुका नमस्ते ३
चतुर्थ सिद्धि चै रंगिनाथ जिभैरव राजा लालवाहन धर अवतार लिया परमेश्वर के धर्म पुत्र
बोलाई विधो के कय कतार उदाविधा कृपा मेद सई रे ॥ बार वर्ष डुडु मात पुरायी रे वार वर्ष
पिएउ ॥ श्री चै रंगिनाथ जिभैरव भैरवी भयहरणी चन्दन के मल पादुका नमस्ते ॥

राजा लालवाहन को पुत पुत्र अवतार लिया अंथार भारावाना पतिके राजा के पास सेवा
पुजा चंदन फूल आरुति धूप ध्यान जय जय काल चौर चौर सिद्धि जिवा जगुको आहार चौर

ॐ नमो आदस गुरु ३ ॥ सत्य युग प्रमान मध्य आचार्य श्री आदिनाथ ॥

त्रेता युग प्रमान मध्य श्री मछिन्दुनाथ ॥ + ॥

दापर युग प्रमान मध्य श्री चै रंगिनाथ ॥ ० ॥

कलियुग प्रमान मध्य आचार्य श्री गुरु गोरखनाथ ॥

दान पानी चुगा पुरायी रे ॥ जिके अरधं गेतारा त्रिपुरा देवी कृपा जस वाहन चतुर्थ सिद्धि चै
रंगिनाथ भैरव भैरवी भयहरणी दुस्तरणी नान्दविन्दु जोत करारुर्द्धरमान गुपरचन्दन
फूल मति सहित ॥ श्री सिद्धि चै रंगिनाथ भैरव भैरवी भयहरणी चन्दन के मल पादुका नमस्ते

॥ ४ ॥ पंचम श्रीब्रह्मभैरव जिको दिया चा (वैद्यौर हसात्र अथारह पुरामन व्रव्याकर्ण सातवार स
नायुनक्षत्र पंडित हतिथि वाहा रासि पसत्र कहोजा लंध्याति प. गंगा गीत गायति सायति
इशानधारिकामपालि ३ सूर्यमंत्र लक्ष्मपात्र अश्वविग्रह नवग्रह
पृथिविकागारा विचारिरे ॥ अथारहजार लुहेश्वर के राजा बोलायिले. अथारहजार
लुहेश्वर राजा के पास सेवा पुजा चन्दन फूल आरति धूप ध्यान जयजय काल चारै
सदा शिवार्जुन को आहार चारै. दाना पानि चूगा पूरायिले. जिसके अर्द्ध गोसावति देवी है
शवाहन पंचम श्रीब्रह्मभैरव भैरवी भयहरण दुलत्रासन नाना विदुजोत करै. दुर्ज
रत्न माने गुपर चंदन फूल मति सहित ॥ श्रीब्रह्मभैरव भैरवी भयहरण चरणा कमल
पादुका नमस्ते ॥ ५ ॥ पलमे विष्णु भैरव जिको दिया. हातर वडंग दाई वचन गदा
पञ्च ॥ मन्त्र लोके देस दानव संहार लेखालिका सत्र. वैद्य के राजा यात कमाले ॥ ६ ॥ पत्र
कोट देश के ध्वज राजा बोलाईरे ॥ ६ ॥ पत्र कोट देस ध्वज राजा के पास सेवा पुजा चन्दन फूल
आरति धूप ध्यान ॥ जयजय काल चारै वोर शिवार्जुन को आहार चारै. दाना पानि चूगा
पूरायिले जिसके अर्द्ध ग. महा लक्ष्मि देवी ग. शवाहन पलमे विष्णु भैरव भैरवी भय
हरण दुलत्रासन नाना विदुजोत कलाल. दुर्ज रत्न माने गुपर चंदन फूल मति सहित
श्रीविष्णु भैरव भैरवी भयहरण चरणा कमल पादुका नमस्ते ॥ ६ ॥ सप्तम श्रीवासु
किनाग भैरव जिने सप्तम श्रीपाताल पृथिवि सप्तदिप पृथि फनिके दुप्रवेसे मेद
निथ हरायिले. तत्र कुलिनागर राजा के पास सेवा पुजा चंदन फूल आरति धूप ध्यान ॥
जयजय काल चारै वोर शिवार्जुन को आहार चारै ॥ दाना पानि चूगा पूरायिले ॥
जिसके अर्द्ध ग. पञ्च नागिनी देव नाग कन्या कर्म वाहन. सप्तम श्रीवासु किना
ग भैरवी भयहरण दुलत्रासन नाना विदुजोत करै. दुर्ज रत्न माने गुपर चंदन. फु